सरस्वती

मणिका संस्कृत व्याकरण

(कक्षा-7)

लेखिका

सुनीता सचदेव

एम०ए० (संस्कृत), बी०एड्०

सेवानिवृत्त संस्कृत विभागाध्यक्षा

भटनागर इंटरनेशनल स्कूल

वसंत कुंज

© New Saraswati House (India) Private Limited

न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड

नई दिल्ली-110002 (इंडिया)

NEW SARASWATI HOUSE

Head Office : Second Floor, MGM Tower, 19 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi–110 002 (India)
Registered Office : A-27, 2nd Floor, Mohan Co-operative Industrial Estate, New Delhi–110 044

Phone : +91-11-4355 6600
Fax : +91-11-4355 6688
E-mail : delhi@saraswatihouse.com
Website : www.saraswatihouse.com
CIN : U22110DL2013PTC262320
Import-Export Licence No. 0513086293

Branches:
• Ahmedabad: Ph. 079-2657 5018 • Bengaluru: Ph. 080-2675 6396
• Chennai: Ph. 044-2841 6531 • Dehradun: Ph. +91-98374 52852
• Guwahati: Ph. 0361-2457 198 • Hyderabad: Ph. 040-4261 5566 • Jaipur: Ph. 0141-4006 022
• Jalandhar: Ph. 0181-4642 600, 4643 600 • Kochi: Ph. 0484-4033 369 • Kolkata: Ph. 033-4004 2314
• Lucknow: Ph. 0522-4062 517 • Mumbai: Ph. 022-2876 9871, 2873 7090
• Nagpur: Ph. +91-70661 49006 • Patna: Ph. 0612-2275 403 • Ranchi: Ph. 0651-2244 654

Revised edition 2018
Reprinted 2019, 2020

ISBN: 978-93-5272-264-8

The moral rights of the author has been asserted.

© New Saraswati House (India) Private Limited

Publisher's Warranty: The Publisher warrants the customer for a period of 1 year from the date of purchase of the Book against any Printing/Binding defect or theft/loss of the book.
Terms and Conditions apply: For further details, please visit our website www.saraswatihouse.com or call us at our Customer Care (toll free) No.: +91-1800 2701 460
Jurisdiction: All disputes with respect to this publication shall be subject to the jurisdiction of the Courts, Tribunals and Forums of New Delhi, India Only.
All rights reserved under the Copyright Act. No part of this publication may be reproduced, transcribed, transmitted, stored in a retrieval system or translated into any language or computer, in any form or by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopy or otherwise without the prior permission of the copyright owner. Any person who does any unauthorised act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

Product Code: NSS2MSV070SKTAB17CBN

This book is meant for educational and learning purposes. The author(s) of the book has/have taken all reasonable care to ensure that the contents of the book do not violate any copyright or other intellectual property rights of any person in any manner whatsoever. In the event the author(s) has/have been unable to track any source and if any copyright has been inadvertently infringed, please notify the publisher in writing for any corrective action.

PRINTED IN INDIA
By Vikas Publishing House Private Limited, Plot 20/4, Site-IV, Industrial Area Sahibabad, Ghaziabad–201 010 and published by New Saraswati House (India) Private Limited, 19 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi–110 002 (India)

© New Saraswati House (India) Private Limited

प्राक्कथन

प्यारे बच्चो! संस्कृत को समझने, बोलने तथा लिखने के लिए हमें व्याकरण के कुछ नियमों को समझना होगा। प्रस्तुत पुस्तक संप्रेषणात्मक पाठ्यक्रम पर आधारित है। आशा है इस पुस्तक के द्वारा संस्कृत भाषा को समझकर आप सब भी इस भाषा को बोल-चाल का माध्यम बना सकेंगे। इस पुस्तक में सरल भाषा में संस्कृत के नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार व्याकरण के नियमों को समझाया गया है। आशा है छात्र इस प्रयास से लाभान्वित होंगे। सभी विद्वदगण अपने अनुपम सुझाव देकर पुस्तक को और उपयोगी बनाने में हमारी सहायता करें।

मैं विशेष रूप से न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्रा०लि० की आभारी हूँ जो छात्रों की पाठ्य-सामग्री को अधिकाधिक रोचक तथा उपयोगी बनाने के लिए निरंतर प्रयास करते रहते हैं। मैं कृतज्ञ हूँ अपने पिता श्री मेहरचन्द जावल जी की जिनकी प्रेरणा ने मुझे संस्कृत विषय के साथ जोड़कर मेरे जीवन को संस्कृतमय बनाया ताकि मैं अपने देश के इस सुंदर व गरिमा से युक्त भाषा-ज्ञान को पा सकूँ तथा इसे आगे फैला भी सकूँ।

–सुनीता सचदेव

संस्कृत भाषा का परिचय

प्रिय बच्चो! संस्कृत शब्द का अर्थ है–संस्कार अर्थात् पवित्र की गई भाषा। नाम के ही अनुसार संसार में केवल संस्कृत भाषा ही दोषहीन व्याकरण वाली पवित्र भाषा है।

संस्कृत भाषा उस भारोपीय परिवार की भाषा है जिससे सभी भाषाओं का जन्म हुआ। भारत की अनेक भाषाओं का जन्म संस्कृत भाषा से ही हुआ।

प्राचीन काल में सभ्य समाज संस्कृत भाषा बोलता था तथा ग्रामीण समाज प्राकृत भाषा बोलता था जो कि संस्कृत का ही परिवर्तित रूप है। चारों वेद, उपनिषद्, पुराण इत्यादि इसी भाषा में लिखे गए। रामायण तथा महाभारत भी इसी भाषा में लिखे गए।

संस्कृत के अनेक कवियों में से कुछ प्रसिद्ध नाम हैं–कालिदास, भारवि, बाणभट्ट, माघ इत्यादि। आज भी अनेक विद्वान इस भाषा को अपनी रचनाओं से समृद्ध कर रहे हैं। सभी संस्कृत प्रेमियों का मन दक्षिण भारत में कर्नाटक के 'माटुर' और 'होसहल्ली' तथा मध्यप्रदेश के 'झिरी' गाँव जाने को तो करता ही होगा जहाँ के सभी लोग केवल संस्कृत भाषा ही बोलते हैं। संसार में संस्कृत के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसी भाषा नहीं है जो प्राचीनतम होते हुए भी वर्तमान युग में बोली जाती हो। आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार संसार की सभी भाषाओं में से 'संस्कृत भाषा' ही कम्प्यूटर के प्रयोग के लिए सर्वाधिक उपयुक्त भाषा है। कुछ विद्वानों के अनुसार संस्कृतभाषी छात्र संसार की किसी भी भाषा को अन्य लोगों से अधिक जल्दी व आसानी से सीख सकते हैं। संभवतः संस्कृत भाषा के इसी गुण को जानकर विदेशों में भी दो विद्यालयों में संस्कृत भाषा को अनिवार्य विषय बना दिया गया है। 'जर्मनी' में भी संस्कृत भाषा को सीखने वाले लोग दिन-प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं। हमें गर्व है कि 'संस्कृतभाषा' हमारे भारत देश की भाषा है।

© New Saraswati House (India) Private Limited

पाठ्यक्रमः

1. **उच्चारणस्थानानि।**
2. **सन्धिः**–स्वर सन्धिः (दीर्घसन्धिः, गुणसन्धिः, वृद्धिसन्धिः, यण्सन्धिः, पूर्वरूपसन्धिः, प्रकृतिभाव सन्धिः)।
3. **शब्दरूप-प्रकरणम्**–(क) अकारान्त-पुंल्लिङ्गशब्दाः (देव, अज, राम); (ख) आकारान्त-स्त्रीलिङ्ग शब्दाः (लता, रमा, निशा); (ग) अकारान्त-नपुंसकलिङ्गशब्दाः (फल, पुस्तक, मित्र); (घ) सर्वनामशब्दाः (तत्, एतत्, किम्, यत् (त्रिषु लिंगेषु अस्मद्, युष्मद्); (ङ) इकारान्त पुंल्लिङ्गशब्दाः (कवि, पति); (च) ईकारान्त पुंल्लिङ्ग (सुधी); (छ) उकारान्त पुंल्लिङ्ग (गुरु); (ज) ऋकारान्त पुंल्लिङ्गशब्दाः (भ्रातृ, पितृ); (झ) इकारान्त स्त्रीलिङ्ग (मति), (ञ) ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग (नदी); (ट) उकारान्त स्त्रीलिङ्ग (धेनु); (ठ) ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग (वधू) ; (ड) ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग (मातृ); (ढ) इकारान्त नपुंसकलिङ्ग (वारि, अक्षि); (ण) उकारान्त नपुंसकलिङ्ग (मधु); (त) ऋकारान्त नपुंसकलिङ्ग (कर्तृ) इत्यादयः।
4. **धातुरूप-प्रकरणम्**–√पठ्, √गम्, √भू, √नम्, √चल्, √खाद्, √पा, √पत्, √स्मृ, √नृत्, √अस् इत्यादयः।
5. **वर्ण-विन्यासः संयोजनम् च।**
6. **पर्यायाः विपर्ययाः च।**
7. **समयलेखनम्** (घटिकां दृष्ट्वा)
8. **संख्याः**–एकतः शतपर्यन्तम्।
9. **कारकाः उपपदविभक्तयश्च** –विना, नाना, उभयतः, अभितः, परितः, सर्वतः, समया, निकषा, प्रति, सह, साकम्, सार्धम्, हीनः, अलम्, नमः, स्वाहा √रुच् सम्बद्धि-नियमाः सप्तमी विभक्ति पर्यन्तम्।
10. **प्रत्ययाः**–क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, तव्यत्, अनीयर्।
11. **अशुद्धि-संशोधनम्।**
12. **अपठितगद्यांशाः**–40-50 पदपरिमिताः एवं 80-100 पदपरिमिताः।
13. **पत्र-लेखनम्**–(1) शुल्कक्षमाहेतु प्रधानाध्यापकं प्रति; (2) आकस्मिकी अनुपस्थितिः हेतु अवकाशाय प्रधानाध्यापकं प्रति; (3) पुस्तकानि प्रेषणाय प्रकाशकं प्रति; (4) सद्वृत्ति-प्रमाणपत्राय आचार्यं प्रति; (5) अग्रजस्य विवाहार्थं अवकाश हेतु प्रधानाचार्यं प्रति; (6) विद्यालयस्य वार्षिकोत्सवं वर्णयन् पितरं प्रति; (7) दूरभाषयंत्रस्य निष्क्रियतां दूरीकर्तुम् दूरभाषकेन्द्रस्य निदेशकं प्रति; (8) जंतुशालाभ्रमणवर्णयन् स्वभगिनीं प्रति
14. **वार्त्तालापाः।**
15. **चित्रवर्णनम्**–मंजूषायाः सहायतया।

© New Saraswati House (India) Private Limited

विषय-सूची

खण्ड 'क' (अनुप्रयुक्तं व्याकरणम्)

1. उच्चारणस्थानानि 9
2. वर्णविन्यासाः संयोगाः च 14
3. सन्धिः 18
4. शब्दरूप-प्रकरणम् 27
5. धातुरूप-प्रकरणम् 47
6. पर्यायाः एवम् विपर्ययाः 69
7. समयलेखनम् 75
8. संख्याः 80
9. कारकाः उपपदविभक्तयः च 87
10. प्रत्ययाः 96
11. अशुद्धिसंशोधनम् 104

खण्ड 'ख' (रचनात्मकं कार्यम्)

12. पत्रलेखनम् 109
13. वार्त्तालापः 115
14. चित्रवर्णनम् 118

खण्ड 'ग' (अपठित-अवबोधनम्)

15. गद्यांशाः 127
(40-50 पदपरिमिताः एवं 80-100 पदपरिमिताः)

- अभ्यास-प्रश्नपत्रम्-1 146
- अभ्यास-प्रश्नपत्रम्-2 150

© New Saraswati House (India) Private Limited

शुरू से ही संस्कृत परीक्षा की तैयारी कैसे करें?

1. उच्चारण

- संस्कृत भाषा में उच्चारण का महत्व बहुत अधिक है। हम जैसा पढ़ते हैं वैसा ही लिखते हैं। शुद्ध पढ़ें तथा शुद्ध लिखें।
- ह्रस्व स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का (एक बार ताली बजाने जितना) समय लगता है तथा दीर्घ स्वरों के लिए दो मात्रा का (दो बार ताली बजाने जितना) समय लगता है।
- प्लुत स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से तीन गुणा या उससे भी अधिक समय लगता है।
- **अ** से युक्त व्यंजनों को ध्यान से पढ़ें तथा बोलें, क्योंकि **अ** की कोई मात्रा नहीं होती।
- संयुक्त स्वरों को ध्यान से बोलें। संयुक्त वर्णों का उच्चारण करते समय शुद्ध व्यंजन से पहले वाले अक्षर पर बल देना चाहिए।
- ऋ तथा र वर्णों का उच्चारण ध्यान से करें।

2. लेखन

- प्रत्येक वर्ण को सुंदर व स्पष्ट लिखने का अभ्यास करें।
- संयुक्त वर्णों को विशेष ध्यान से लिखें।
- अनुस्वार का उच्चारण जहाँ हो उसी वर्ण के ऊपर उसे लिखना चाहिए; यथा–**संस्कृतम्।**
- स्वर से युक्त 'र' इत्यादि वर्ण शुद्ध व्यंजनों के नीचे लिखे जाएँगे; उदाहरणार्थ **शुद्धम्** पद में द् + ध वर्ण हैं। देखने में 'द्' स्वरयुक्त लगता है व 'ध' स्वरहीन, क्योंकि हमें लगता है कि 'पूर्ण' का स्थान ऊपर होता है। संस्कृत भाषा हमें विनम्रता सिखाती है। **पूर्णाक्षर** (स्वरयुक्त अक्षर) को विनम्रता से नीचे झुककर और **शुद्ध** (स्वर से रहित) व्यंजन को ऊपर रखकर सहारा देने का विधान करती है।
- पूरे अंक पाने हों तो अभ्यास प्रतिदिन करना चाहिए।

© New Saraswati House (India) Private Limited

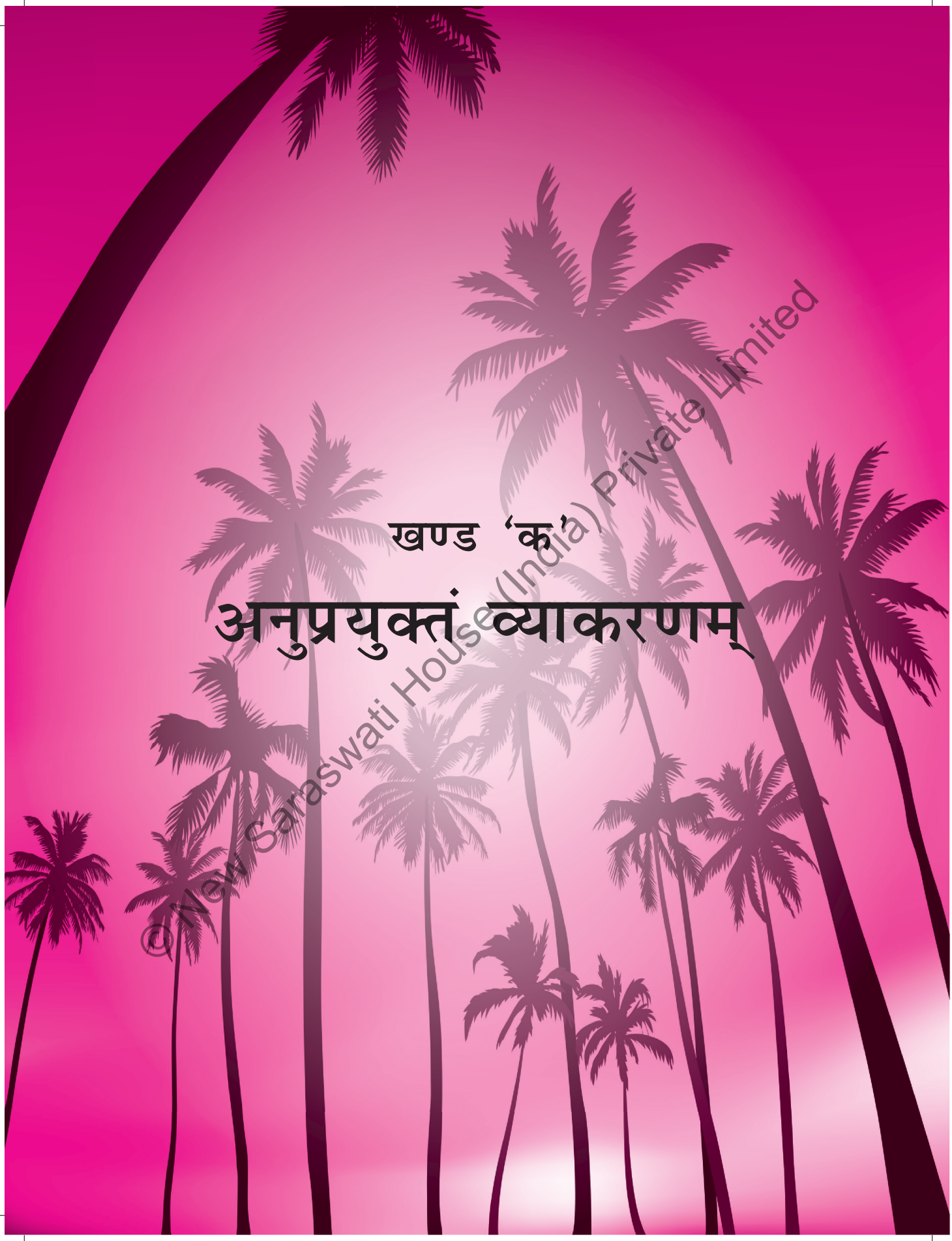

खण्ड 'क'

अनुप्रयुक्तं व्याकरणम्

© New Saraswati House (India) Private Limited

© New Saraswati House (India) Private Limited

1 उच्चारणस्थानानि

वर्णों का उच्चारण करते समय मुख के जिन भागों का प्रयोग होता है उन्हें उच्चारण स्थान कहते हैं। जिह्वा मुख के जिस अंग का स्पर्श करती है या जिस स्थान पर प्रयत्न करती है अथवा वायु जिन स्थानों से टकराकर बाहर निकलती है वे अंग उस वर्ण-विशेष का उच्चारण स्थान कहलाते हैं।

विभिन्न वर्णों के उच्चारण स्थान निम्नलिखित तालिका में दिए गए हैं :

उत्पत्तिस्थानम्	स्वराः 13	वर्गीय व्यञ्जनानि (स्पर्शाः) 25	अन्तःस्थाः 4	ऊष्माणः 4	अयोगवाहाः 3	संज्ञा
1. कण्ठः	अ, आ	कु = क्, ख्, ग्, घ्, ङ्	–	ह्	:	कण्ठ्यः
2. तालुः	इ, ई	चु = च्, छ्, ज्, झ्, ञ्	य्	श्	–	तालव्यः
3. मूर्धा	ऋ, ॠ	टु = ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्	र्	ष्	–	मूर्धन्यः
4. दन्ताः	ऌ	तु = त्, थ्, द्, ध्, न्	ल्	स्	–	दन्त्यः
5. ओष्ठौ	उ, ऊ	पु = प्, फ्, ब्, भ्, म्	–	–	ं	ओष्ठ्यः
6. नासिका	–	ङ्, ञ्, ण्, न्, म्	–	–	ँ	नासिक्यः
7. कण्ठतालुः	ए, ऐ	–	–	–	–	कण्ठतालव्यः
8. कण्ठोष्ठौ	ओ, औ	–	–	–	–	कण्ठोष्ठ्यः
9. दन्तोष्ठौ	–	–	व्	–	–	दन्तोष्ठ्यः

© New Saraswati House (India) Private Limited

ध्यातव्यम्

- नासिक्य वर्णों के दो-दो उच्चारण स्थान होते हैं।
- प्रत्येक वर्ग का उच्चारण स्थान एक ही होता है।
- संयुक्त वर्णों में जिन दो वर्णों का संयोग हो उन्हीं दोनों के उच्चारण स्थान उस संयुक्त वर्ण के उच्चारण स्थान भी हो जाते हैं।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. जिह्वा मुख के अंदर जिन विशेष अंगों का स्पर्श करती है वही उस वर्ण-विशेष का उच्चारण स्थान होता है।
2. 'ए' तथा 'ऐ' वर्णों का उच्चारण स्थान कंठ व तालु होता है।
3. 'ओ' तथा औ वर्णों का उच्चारण स्थान कण्ठोष्ठ होता है।
4. 'व्' वर्ण का उच्चारण दाँतों तथा होठों की सहायता से किया जाता है।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. अधोलिखितप्रश्नानामुत्तरम् उचित पदम् चित्वा लिखत।

(उचित पद चुनकर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए।)

1. च वर्गस्य नासिक्यं वर्णम् अस्ति– .....

   (*i*) ण् (*ii*) ञ् (*iii*) (ङ)

2. व् इति वर्णस्य उच्चारणस्थानं किम्? .....

   (*i*) मूर्धा (*ii*) दन्तोष्ठौ (*iii*) कण्ठतालुः

3. इ, छ्, ए, श् एतेषु वर्णेषु कः वर्णः तालव्यः न अस्ति? .....

   (*i*) छ् (*ii*) ए (*iii*) (श्)

4. दन्त्यः वर्णः कः? .....

   (*i*) ध् (*ii*) ब् (*iii*) ण्

5. गजः इति पदे कस्य वर्ण उच्चारणस्थानं कण्ठः न अस्ति? .....

   (*i*) ग् (*ii*) ज् (*iii*) अः

6. कस्य वर्णस्य उच्चारणस्थानं कण्ठोष्ठौ अस्ति? .....

   (*i*) ऐ (*ii*) ओ (*iii*) व्

7. कः वर्णः तालव्यः अस्ति? .....

   (*i*) च् (*ii*) प् (*iii*) ख्

8. शिवः इति पदे 'श' वर्णस्य उच्चारणस्थानम् किम्? .....

   (*i*) मूर्धा (*ii*) तालुः (*iii*) दन्ताः

9. कृपया अत्र 'ऋ' वर्णस्य उच्चारणस्थानम् किम्? .....

   (*i*) मूर्धा (*ii*) तालुः (*iii*) नासिका

© New Saraswati House (India) Private Limited

10. दन्त्यः वर्णः कः?

(*i*) भ (*ii*) ध् (*iii*) ष्

11. नासिक्यः ओष्ठ्यः च कः वर्णः?

(*i*) न् (*ii*) ञ् (*iii*) म्

12. कस्य वर्णस्य उच्चारणस्थानं मूर्धा भवति?

(*i*) व् (*ii*) ढ् (*iii*) न्

13. कस्य वर्णस्य उच्चारणस्थानं कण्ठतालुः अस्ति?

(*i*) व् (*ii*) इ (*iii*) ए

14. कः वर्णः तालव्यः अस्ति?

(*i*) स् (*ii*) स् (*iii*) झ्

15. ब् वर्णस्य उच्चारणस्थानम् किम् अस्ति?

(*i*) ओष्ठौ (*ii*) दन्तोष्ठौ (*iii*) दन्ताः

16. कः वर्णः दन्त्यः?

(*i*) ल् (*ii*) ट् (*iii*) म्

17. नासिक्यः वर्णः कः?

(*i*) उ (*ii*) प् (*iii*) न

18. शरद् इति पदे कस्य वर्णस्योच्चारणस्थानं मूर्धा अस्ति?

(*i*) श् (*ii*) र् (*iii*) द्

19. कः वर्णः कण्ठ्यः अस्ति?

(*i*) च् (*ii*) म् (*iii*) ह्

20. पत्रम् पदे 'त्' वर्णस्योच्चारणस्थानं किम् अस्ति?

(*i*) ओष्ठौ (*ii*) नासिका (*iii*) औष्ठौ नासिका च

21. कच्छपौ पदे 'प्', वर्णस्य उच्चारणस्थानम् किम् अस्ति?

(*i*) मूर्धा (*ii*) नासिका (*iii*) ओष्ठौ

22. ऋषिः पदस्य कः वर्णः मूर्धन्यः न अस्ति?

(*i*) इ (*ii*) ऋ (*iii*) ष्

23. रासभस्य पदे 'भ्' वर्णस्योच्चारणस्थानं किम् अस्ति?

(*i*) तालुः (*ii*) ओष्ठौ (*iii*) मूर्धा

© New Saraswati House (India) Private Limited

24. एतेषु वर्णेषु मूर्धन्यः कः वर्णः ? .....

(*i*) च् (*ii*) क (*iii*) ढ्

25. एतेषु कः वर्णः दन्त्यः अस्ति? .....

(*i*) श् (*ii*) ष् (*iii*) स्

II. निम्नाङ्कितवाक्येषु उचितस्याग्रे (✓) अनुचितस्याग्रे च (×) इति चिह्नं लिखत।

(निम्नांकित वाक्यों में सही वाक्यों के आगे (✓) तथा अशुद्ध के आगे (×) निशान लगाइए।)

1. 'बालकस्य' पदस्य 'ब' वर्णस्य उच्चारणस्थानं तालुः अस्ति। ☐
2. 'अजः' पदे 'अ' वर्णः कण्ठ्यः अस्ति। ☐
3. न् + अ + म् + अः अत्र द्वौ वर्णौ कण्ठयौ न स्तः। ☐
4. द् + ए + व + ई अत्र 'ई' वर्णस्योच्चारणस्थानं मूर्धा अस्ति। ☐
5. 'ऌ' वर्णस्य उच्चारणस्थानं दन्ताः अस्ति। ☐
6. 'म्' वर्णः नासिक्यः अस्ति। ☐

III. समुचितं मेलनं कुरुत।

(उचित मिलान कीजिए।)

1. **वर्णाः**	**स्थानानि**	
1. ढ्	(क) दन्तोष्ठौ	.....
2. ई	(ख) मूर्धा	.....
3. व्	(ग) तालुः	.....
4. ञ्	(घ) दन्ताः	.....
5. ऐ	(ङ) नासिका	.....
6. ऌ	(च) कण्ठतालुः	.....

IV. मञ्जूषातः उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(मंजूषा से उचित पद चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

ण्, व्, कण्ठः, द्, नासिका एवं कण्ठः, नासिका एवं तालुः

1. ..... वर्णस्योच्चारणस्थानं दन्तोष्ठः अस्ति।
2. ..... वर्णस्योच्चारणस्थानं दन्त्यः अस्ति।

© New Saraswati House (India) Private Limited

3. ..... वर्णः नासिक्यः मूर्धन्यः च अस्ति।

4. 'ख' वर्णस्योच्चारणस्थानम् ..... अस्ति।

5. 'ञ' वर्णस्योच्चारणस्थानम् ..... अस्ति।

6. 'ङ्' वर्णस्योच्चारणस्थानम् ..... अस्ति।

V. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि अधोदत्तेषु वर्णेषु उचितं वर्णं चित्वा लिखत।

(दिए गए वर्णों से उचित वर्ण चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।)

1. थ्, ट्, छ्, ग् वर्णेषु कः वर्णः दन्त्यः? .....

(*i*) ग् (*ii*) छ् (*iii*) थ् (*iv*) ट्

2. 'म्' वर्णः ओष्ठ्यः अथवा कण्ठ्यः? .....

(*i*) ओष्ठ्य (*ii*) कण्ठ्यः (*iii*) किमपि न (*iv*) कण्ठ्यः एवम् ओष्ठ्यः

3. ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, ड् वर्णेषु कः वर्णः नासिक्यः न अस्ति? .....

(*i*) म् (*ii*) ण् (*iii*) न (*iv*) ड्

4. च्, ख्, ढ्, त् वर्णेषु कः वर्णः तालव्यः अस्ति? .....

(*i*) ख् (*ii*) च् (*iii*) ढ् (*iv*) त्

5. 'काव्यम्', इति पदे कस्य वर्णस्य उच्चारण स्थानं कण्ठः अस्ति? .....

(*i*) क् (*ii*) व् (*iii*) य् (*iv*) म्

6. य्, ल्, भ्, व् वर्णेषु कस्य उच्चारण स्थानं दन्तोष्ठम् अस्ति? .....

(*i*) व् (*ii*) य् (*iii*) भ् (*iv*) ल्

7. य्, र्, न्, व् वर्णेषु कः वर्णः नासिक्यः अस्ति? .....

(*i*) व् (*ii*) य् (*iii*) र् (*iv*) न्

8. 'द्' वर्णस्य उच्चारणस्थानं किम् अस्ति? .....

(*i*) दन्ताः (*ii*) तालुः (*iii*) औष्ठौ (*iv*) दन्तोष्ठम्

9. कयोः स्वरवर्णयोः उच्चारणस्थानं मूर्धा अस्ति? .....

(*i*) अ, आ (*ii*) इ, ई (*iii*) उ, ऊ (*iv*) ऋ, ॠ

10. ओ, औ स्वरवर्णयोः उच्चारणस्थानं किम् अस्ति? .....

(*i*) कण्ठोष्ठौ (*ii*) दन्तोष्ठौ (*iii*) दन्ततालुः (*iv*) ओष्ठौ

© New Saraswati House (India) Private Limited

2 वर्णविन्यासाः संयोगाः च

वर्ण-विन्यास व वर्ण-संयोग–छात्रो! आप तो जानते ही हैं कि वर्णों के मिलने से ही कोई शब्द या पद बनता है। वर्ण पद की सबसे छोटी इकाई है जिसके और खंड नहीं किए जा सकते हैं। किसी भी पद के प्रत्येक वर्ण को पृथक्-पृथक् करना ही वर्ण-विभाजन अथवा वर्ण-विन्यास कहलाता है। वर्णों को जोड़कर सार्थक पद बनाना ही वर्णों का संयोग कहलाता है। संयोग करते समय शुद्ध व्यंजनों से आगे यदि ह्रस्व 'अ' आता है तो वर्ण का हल् चिह्न (्) हट जाता है। ह्रस्व 'अ' व्यंजन को पूरा या स्वरयुक्त तो करता है, किंतु इसकी कोई मात्रा व्यंजन में नहीं लगती। ठीक इसी तरह जब व्यंजन से स्वर अलग होता है तो वह व्यंजन हलन्त हो जाता है। 'अ' के अतिरिक्त अन्य सभी स्वरों के जुड़ने पर उनकी मात्राएँ उनके साथ लगाई जाती हैं।

उदाहरण–

वर्णविन्यासाः

1. छात्रा = छ् + आ + त् + र् + आ।
2. पुस्तकम् = प् + उ + स् + त् + अ + क् + अ + म्।

वर्णसंयोगाः

1. क् + अ + ल् + अ + म् + अः = कलमः।
2. द् + ई + प् + अ + क् + अः = दीपकः।

ध्यातव्यम्

- स्वरों का प्रयोग स्वतंत्र रूप से किया जा सकता है।
- व्यंजनों को बोलने के लिए स्वरों की आवश्यकता होती है।
- **ऌ** वर्ण एक स्वर है तथा इसका दीर्घ नहीं होता।
- शुद्ध व्यंजनों के उच्चारण के लिए उससे पूर्व ध्वनि पर अधिक बल दिया जाता है।
- संयुक्त वर्ण का उच्चारण करते समय भी उससे पहले वाले अक्षर पर बल देना चाहिए। अन्तिमाक्षर का उच्चारण पूरे ध्यान से करें।
- शुद्ध व्यंजनों को लिखते समय उन्हें आधा या उनके नीचे हल् (्) लगाकर लिखना चाहिए; यथा–क अथवा क्।
- स्वर मिल जाने पर वर्ण हल् (्) को छोड़ देते हैं; उदाहरण–क् + अ = क। इसी तरह स्वर से अलग होने पर हल् (्) पुनः जुड़ जाते हैं।
- एक ही ध्वनि से अनेक शब्द शुरू हो सकते हैं। प्रत्येक ध्वनि के उच्चारण के लिए हमारे मुख के विशेष अंग विशेष प्रयास करते हैं।
- संयोग होने पर शुद्ध व्यंजनों को ऊपर तथा सस्वर व्यंजन को नीचे स्थान दिया जाता है।
- 'ध' तथा 'घ', ऌ तथा ल इत्यादि एक जैसे लगने वाले वर्णों को ध्यान से बोलें व लिखें।
- ह्रस्व 'अ' से युक्त वर्णों के लिखते एवं बोलते समय विशेष ध्यान रखें, क्योंकि 'अ' की कोई मात्रा वर्णों के साथ नहीं लगती।

© New Saraswati House (India) Private Limited

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. विसर्ग अयोगवाह है। अतएव वर्ण-विश्लेषण (विन्यास) अथवा वर्ण-संयोजन करते हुए भी इसे अंतिम स्वर के साथ ही लिखा जाएगा। उदाहरण के लिए–काकः = क्+आ+क्+अः लिखना ही शुद्ध है। इस तरह से विसर्ग को लिखना अशुद्ध हो जाएगा–क् + आ + क् + अ + :
2. विभिन्न ध्वनियाँ ही वर्ण कहलाती हैं। ध्वनियों के सार्थक संयोग को शब्द कहते हैं।
3. शुद्ध व्यंजन, स्वरों की सहायता के बिना नहीं बोले जाते। दो स्वरों के मिलने से संयुक्त स्वर बनते हैं।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. वर्ण-संयोजनं कुरुत।

(वर्ण-संयोजन कीजिए।)

1. क् + अ + व् + इः = ...
2. क् + ऋ + ष् + ण् + अः = ...
3. भ् + अ + व् + अ + न् + त् + अ + म् = ...
4. म् + अ + ह + ए + श् + अः = ...
5. क् + आ + र् + य् + आ + ण् + इ = ...
6. क् + अ + र् + त् + अ + न् + अ + म् = ...
7. क् + अ + म् + अ + ल् + अ + म् = ...
8. ज् + अ + ग् + अ + द् + ग् + उ + र् + उ + म् = ...
9. व् + आ + स् + उ + द् + ए + व् + अ + म् = ...
10. न् + औ + क् + आ + य् + आः = ...
11. व् + आ + ल् + म् + ई + क् + इः = ...
12. प् + उ + त् + र् + ए + ष् + उ = ...
13. प् + अ + त् + र् + आ + ण् + इ = ...
14. आ + ग् + अ + च् + छ् + अ + त् = ...

© New Saraswati House (India) Private Limited

15. द् + ई + प् + आ + व् + अ + ल् + य् + आ + म् = ...

16. स् + अ + म् + अ + य् + अः = ...

17. क् + आ + ल् + अः = ...

18. व् + अ + द् + अ = ...

19. क् + अ + र् + त् + अ + व् + य् + अ + म् = ...

20. च् + इ + द् + र् + ऊ + प् + अ + म् = ...

21. अ + ध् + इ + क् + आ + र + ई = ...

22. म् + आ + त् + आ + म् + अ + हः = ...

23. भ् + आ + र् + अ + त् + अ + म् = ...

24. ज् + अ + य् + अ + त् + ए = ...

25. ग् + र् + ई + ष् + म् + ए = ...

II. वर्ण-विच्छेदं कुरुत।

(वर्ण-विच्छेद कीजिए।)

1. पुस्तकम् = ...

2. सर्वेषाम् = ...

3. कल्याणम् = ...

4. निरामयाः = ...

5. पार्वती = ...

6. जन्मभूमिश्च = ...

7. प्रतिध्वनिः = ...

8. अपि = ...

9. गरीयसि = ...

10. वन्दे = ...

11. मातरम् = ...

12. गिरयः = ...

© New Saraswati House (India) Private Limited

13. दूरतः = ...

14. रम्याः = ...

15. रामः = ...

16. अमारयत् = ...

17. कश्चित् = ...

18. सत्यम् = ...

19. धर्मम् = ...

20. लोचनम् = ...

21. सज्जनः = ...

22. विश्वासम् = ...

23. कुरु = ...

24. तन्मयः = ...

25. कुर्वन्ति = ...

26. पितृव्या = ...

27. तारिका = ...

28. पर्णम् = ...

29. अवकाशाः = ...

30. मम = ...

© New Saraswati House (India) Private Limited

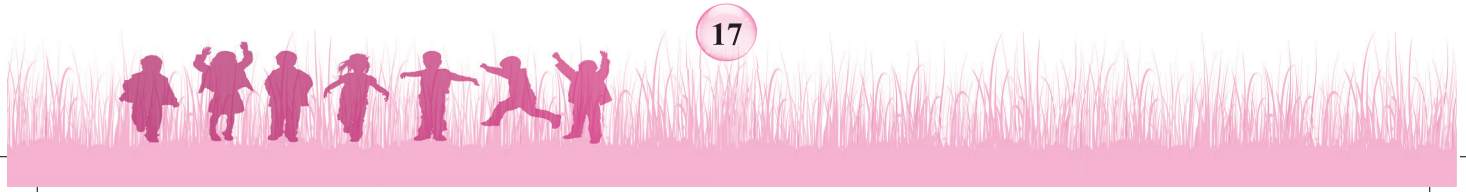

3 सन्धिः

दो या दो से अधिक वर्णों के पास-पास आने पर उनमें जो विकार (परिवर्तन) होता है उसे संधि कहते हैं; जैसे– सुर + इन्द्रः = सुरेन्द्रः, विद्या + अर्थी = विद्यार्थी। वाक्यों को संक्षिप्त करने के लिए वक्ता इच्छानुसार संधि का प्रयोग वाक्यों में कर सकते हैं।

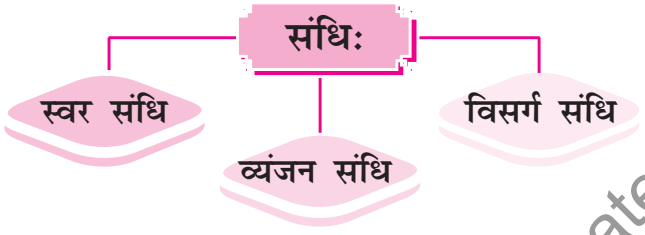

स्वर संधिः–यदि दो स्वरों के पास आने पर कोई विकार या परिवर्तन हो तो वह स्वर संधि कहलाती है।

व्यंजन संधिः–यदि व्यंजन के साथ स्वर या व्यंजन के मिलने पर उसमें परिवर्तन हो तो उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

विसर्ग संधिः–यदि विसर्ग के किसी स्वर या व्यंजन के साथ मिलने से उसमें परिवर्तन हो तो उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

सप्तमी कक्षा में केवल स्वर संधि का ज्ञान कराया जाएगा।

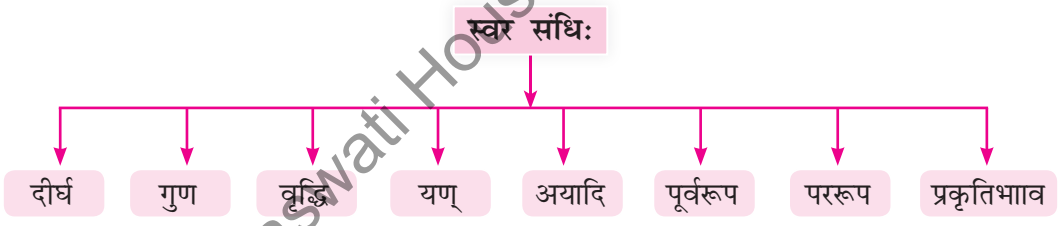

स्वर सन्धिः

1. **दीर्घ सन्धिः**–यदि पूर्व पद का अंतिम स्वर अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ हो तथा उत्तर पद का पहला अक्षर भी उसी जाति का हो तो दोनों के स्थान पर एक दीर्घ हो जाता है। इसे हम निम्न प्रकार समझ सकते हैं–

- अ + अ → आ
  सूर्य + अस्तः = सूर्यास्तः
- आ + आ → आ
  महा + आशयः = महाशयः
- अ + आ → आ
  शिव + आलयः = शिवालयः
- आ + अ → आ
  विद्या + अर्थी = विद्यार्थी

ठीक इसी तरह–

© New Saraswati House (India) Private Limited

• इ + इ = ई
हरि + इच्छा = हरीच्छा

ई + ई = ई
रजनी + ईशः = रजनीशः

इ + ई = ई
प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा

ई + इ = ई
देवी + इन्द्रः = देवीन्द्रः

• उ + उ = ऊ
गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः

ऊ + ऊ = ऊ
वधू + ऊचुः = वधूचुः

उ + ऊ = ऊ
सिन्धु + ऊर्मिः = सिन्धूर्मिः

ऊ + उ = ऊ
वधू + उत्सवः = वधूत्सवः

ऋ के बाद सजातीय ऋ आने पर विकल्प (इच्छा) से ॠ होता है तथा ऋ के बाद लृ आने पर भी ऋ होता है (विकल्प से)।

• ऋ + ऋ = ॠ
पितृ + ऋणम् = पितॄणम्

ऋ + लृ = ॠ
होतृ + लृकारः = होतॄकारः

ऋ + ऋ = ऋ
मातृ + ऋणम् = मातृणम्

ऋ + लृ = लृ
होतृ + लृकारः = होतॢकारः

अपवाद–कुछ स्थानों पर संधि का नियम लागू होने पर भी संधि नहीं होने का विधान होता है। वे उस संधि के अपवाद होते हैं; यथा–सार + अङ्गः = सारङ्गः इत्यादि।

2. गुण सन्धिः–यदि पहले पद के अंत में अ, आ हो तथा उत्तर पद के पहले अक्षर इ, ई, उ, ऊ, ऋ, लृ हों तो उनका क्रम से ए, ओ, अर् तथा अल् हो जाता है।

• अ + इ = ए
नर + इन्द्रः = नरेन्द्रः

अ + ई = ए
गण + ईशः = गणेशः

आ + इ = ए
रमा + इच्छा = रमेच्छा

आ + ई = ए
महा + ईशः = महेशः

• अ + उ = ओ
चन्द्र + उदयः = चन्द्रोदयः

आ + उ = ओ
महा + उदयः = महोदयः

अ + ऊ = ओ
जल + ऊर्मिः = जलोर्मिः

आ + ऊ = ओ
गंगा + ऊर्मिः = गंगोर्मिः

© New Saraswati House (India) Private Limited

- अ + ऋ → अर्
  राज + ऋषिः = राजर्षिः
- आ + ऋ → अर्
  महा + ऋषिः = महर्षिः
- अ + ऌ → अल्
  तव + ऌकारः = तवल्कारः
- आ + ऌ → अल्
  माला + ऌकारः = मालल्कारः

3. वृद्धि सन्धिः—यदि पूर्व पद के अंत में **अ** या **आ** तथा उत्तर पद के पूर्व वर्ण **ए** या **ऐ** हों तो दोनों के स्थान पर **ऐ** हो जाता है।

- अ + ए → ऐ
  तव + एव = तवैव
- आ + ए → ऐ
  सदा + एव = सदैव
- अ + ऐ → ऐ
  मत + ऐक्यम् = मतैक्यम्
- आ + ऐ → ऐ
  रमा + ऐश्वर्यम् = रमैश्वर्यम्

4. यण् सन्धिः—यदि पूर्व पद का अंतिम वर्ण इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ तथा ऌ हो तथा उत्तर पद का प्रथमाक्षर कोई भी भिन्न या विजातीय स्वर हो तो इ, ई को य्; उ, ऊ को व्; ऋ, ॠ को र् तथा ऌ को ल् हो जाता है।

- इ + भिन्न स्वर → य्
  यदि + अपि = यद्यपि
- ई + भिन्न स्वर → य्
  सरस्वती + आगच्छति = सरस्वत्यागच्छति
- उ + भिन्न स्वर → व्
  लघु + इदम् = लघ्विदम्
- ऊ + भिन्न स्वर → व्
  वधू + आगच्छत् = वध्वागच्छत्
- ऋ + भिन्न स्वर → र्
  पितृ + उपदेशः = पित्रुपदेशः
- ऌ + भिन्न स्वर → ल्
  ऌ + आकारः = लाकारः

© New Saraswati House (India) Private Limited

5. **अयादि सन्धिः**—ए, ऐ, ओ, औ यदि पहले हों तथा बाद में कोई भी स्वर हो तो ए को अय्, ऐ को आय्, ओ को अव्, औ को आव् हो जाता है।

- ए + कोई भी स्वर

  अय्

  शे + अनम्

  = शयनम्

ऐ + कोई भी स्वर

आय्

ग + अनम्

= गायनम्

- ओ + कोई भी स्वर

  अव्

  पो + अनम्

  = पवनम्

औ + कोई भी स्वर

आव्

भ + उकः

= भावुकः

6. **पूर्वरूपसन्धिः**—पद का अंतिम अक्षर ए या ओ हो और उसके बाद आने वाला अक्षर अ (केवल ह्रस्व) हो तो **अयादि सन्धि** न होकर पूर्वरूप सन्धि का नियम लागू होता है तथा अ पूर्व पद ए या ओ में बिना परिवर्तन मिल जाएगा तथा पहचान के लिए अ के स्थान पर ऽ (अवग्रह चिह्न) लगा दिया जाता है।

- बालो + अस्ति

  = बाल्, ओ + अ, स्ति

  = बाल्, ओ + –, स्ति

  = बाल् ओ + ऽ स्ति

  = बालोऽस्ति

वृक्षे + अपि

= वृक्ष्, ए + अ, पि

= वृक्ष्, ए + –, पि

= वृक्ष् ए + –, पि

= वृक्षेऽपि

7. **पररूपसन्धिः**—पहले पद के अंत में यदि **अकारान्त उपसर्ग** हो तथा बाद में ए, ओ से शुरू होने वाली धातु हो तो दोनों के स्थान पर क्रम से ए, ओ ही हो जाता है।

- प्र + एषयति

  = प्र् अ + ए, ष, यति

  ए

  = प्रेषयति

अव + ओषति

= अव्, अ + ओ, षति

ओ

= अवोषति

© New Saraswati House (India) Private Limited

8. **प्रकृति भाव/प्रगृह्य संज्ञा**–संधि के नियम लागू होने पर भी जब संधि न करके उसे प्राकृतिक रूप में ही रखने का नियम हो तो उसे **प्रकृति भाव** कहते हैं।

एक स्वर वाले अव्ययों की प्रगृह्य संज्ञा होती है।

- इ + इन्द्रः = इ इन्द्रः
- उ + उमेशः = उ उमेशः

द्विवचन के अंत में ई, ऊ तथा ए हों तो उनकी सभी स्थानों पर (शब्दों तथा धातुओं के आने पर भी) **प्रगृह्य संज्ञा** होती है।

- कवी + एतौ = कवी एतौ
- गिरी + इमौ = गिरी इमौ
- विष्णू + एतौ = विष्णू एतौ
- सेवेते + इमौ = सेवेते इमौ
- लते + एते = लते एते
- भाषेते + एतौ = भाषेते एतौ

संबोधन के ओ की तथा दूर से पुकारने पर जब अंतिम स्वर प्लुत हो जाता है उसकी भी प्रगृह्य संज्ञा होती है।

विकल्प का अर्थ है–इच्छा से। इसमें दोनों रूप मान्य होते हैं।

- शम्भो + आयाहि (ओ की विकल्प से)
= शम्भोऽ आयाहि/शम्भो आयाहि
- हरेऽ + आगच्छ
= हरेऽ आगच्छ

अदस् (यह) शब्द के रूपों के 'अमी' तथा 'अमू' पदों की प्रगृह्य संज्ञा होने से प्रकृति भाव रह जाता है।

- अमू + आगच्छतः = अमू आगच्छतः
- अमी + ईशाः = अमी ईशाः

संयोगः–दो या दो से अधिक वर्णों के पास-पास आने पर बिना परिवर्तन के जो मेल होता है उसे संयोग कहते हैं–निम्न + लिखित = निम्नलिखित।

ध्यातव्यम्

- संधि करना या न करना लेखक या वक्ता की विवक्षा (इच्छा) पर निर्भर करता है।
- जिन वर्णों में परिवर्तन या संधि होनी है, उन्हीं में संधि करें, शेष वर्णों में कोई परिवर्तन नहीं होता।
- ध्यान रखें कि परिवर्तन दो व्यंजनों के स्थान पर हो रहा है या एक व्यंजन के स्थान पर।
- अपवाद नियमों को भी विशेष रूप से ध्यान में रखें।

© New Saraswati House (India) Private Limited

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. वर्णों में परिवर्तन को संधि कहते हैं।
2. संधि के तीन भेद होते हैं–स्वर संधि, व्यंजन संधि तथा विसर्ग संधि।
3. दीर्घ संधि में दो सजातीय स्वरों का एक दीर्घ होता है।
4. पदान्त अ, आ के बाद ए, ऐ हो तो दोनों के स्थान पर ऐ हो जाता है।
5. पदान्त अ, आ के बाद इ, ई का ए हो जाता है।
6. पदान्त अ, आ के बाद उ, ऊ का ओ हो जाता है।
7. पदान्त इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ के स्थान पर कोई भी भिन्न या विजातीय स्वर आने पर इ / ई का 'य्', उ / ऊ को 'व्', ऋ / ॠ को 'र' तथा ऌ को 'ल्' हो जाता है।
8. पदान्त ए, ऐ के बाद कोई भी स्वर हो तो ए का 'अय्' और ऐ का 'आय्' हो जाता है।
9. पदान्त ओ, औ के बाद कोई भी स्वर हो तो ओ का 'अव्', और औ का 'आव्' हो जाता है।
10. पदान्त ए, ओ के बाद 'अ' हो तो वह पदान्त ए, ओ में ही मिल जाता है तथा 'अ' के स्थान पर पहचान के लिए अवग्रह चिह्न (ऽ) लगाया जाता है।
11. संधि का नियम जहाँ लागू होना चाहिए वहाँ पर यदि संधि न हो रही हो तो उसे प्रगृह्य या प्रकृतिभाव की संज्ञा दी जाती है।
12. दो वर्णों के पास-पास आने पर बिना परिवर्तन के जुड़ना संयोग कहलाता है।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. वाक्येषु रञ्जितपदेषु सन्धिविच्छेदं कृत्वा सन्धेः नाम अपि लिखत।

(निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन पदों का संधि-विच्छेद कीजिए तथा संधि का नाम भी लिखिए।)

1. सा प्रौढा कुतः अगच्छत्? ..... + ...
2. नवौषधिः कुत्र अरक्षत्? ..... + ...
3. तं विशालं भवनं पश्य। ..... + ...
4. उत्तिष्ठ: पुत्र! सूर्योदयः अभवत्। ..... + ...
5. अहम् न जाने, पुस्तकं तवेति। ..... + ...
6. छात्रः हितोपदेशं शृणोति। ..... + ...
7. अहम् वधूत्सवे नृत्यामि। ..... + ...

© New Saraswati House (India) Private Limited

8. देवर्षिः नारदः आगतः। ..... + ...

9. अद्यैव मरणमस्तु युगान्तरे वा। ..... + ...

10. सर्वप्रथमं गणेशं पूजयामि। ..... + ...

II. निम्नलिखितवाक्येषु रञ्जितपदेषु सन्धिं कुरुत।

(निम्नलिखितवाक्यों में रंगीन पदों में संधि कीजिए)

1. यदा सः खादिष्यति तदा + एव सा खादिष्यति। .....

2. अस्मिन् विषये अस्माकम् मत + ऐक्यम् एव। .....

3. तत्र + एव मम मित्रम् क्रीडति। .....

4. अद्यावकाशः न + एव अस्ति। .....

5. द्वौ + एव नरौ धन्यौ शूरः दाता च। .....

6. अद्य + अहम् मित्रेण सह शुक्रतालम् गतवान्। .....

7. अत्र + एव कश्चन् महातपस्वी वसति। .....

8. भक्ताः देव + आलये अर्चयन्ति। .....

9. क्व तत्र भवान् मम + आर्यो रामः? .....

10. तस्य गाथा अद्य + अपि स्मरणीया अस्ति। .....

III. निम्नलिखितेषु रञ्जितपदेषु सन्धिं सन्धिच्छेदं वा कुरुत।

(निम्नलिखित रंगीन पदों में संधि या संधिच्छेद कीजिए।)

1. पुत्री! किञ्चित् लो + अनम् आनय। .....

2. अधुना मा क्रीड। इति मात्राज्ञा अस्ति। ..... + ...

3. आगच्छतु भवान्! सु + आगतम् तव। .....

4. माता सर्वदा + एव पुत्रहितम् अभिलषति। .....

5. हिमालयः भारतस्य रक्षकः। ..... + ...

6. महा + उदय अत्र पश्य। .....

© New Saraswati House (India) Private Limited

7. सा तु लतैव वृक्षोपरि। ..... + ...

8. स्नानाय चलत, नदी + अत्र वहति। .....

9. बाला + एका आगता। .....

10. विक्रम + उर्वशीयस्य रचयिता कः आसीत्? .....

IV. दत्तविकल्पेभ्यः उचितं पदं चित्वा रञ्जितपदेषु सन्धिः सन्धिच्छेदं वा कुरुत।

(दिए गए विकल्पों से रंगीन पदों का संधि अथवा संधि-विच्छेद चुनिए।)

1. 1. अस्माकं विद्यालये अद्य + अवकाशः अस्ति।

(*i*) अद्यवकाशः (*ii*) अद्यअवकाशः (*iii*) अद्यावकाशः

2. हरिः दैत्यारिः अस्ति।

(*i*) दै + त्यारिः (*ii*) दैत्य + अरिः (*iii*) दैत्य + आरिः

3. एकां सूक्तिम् लिखत।

(*i*) सू + उक्तिम् (*ii*) सु + उक्तिम् (*iii*) सुक् + तिम्

4. अयं छात्रः सर्वोत्तमः अस्ति।

(*i*) सर्वः + उत्तमः (*ii*) सर्वो + त्तमः (*iii*) सर्व + उत्तमः

5. नवोढा अत्र एव आगच्छति।

(*i*) नव + ऊढा (*ii*) नवो + ढा (*iii*) न + वोढा

6. मह्यं गंगोदकम् प्रयच्छ।

(*i*) गंगो + दकम् (*ii*) गंगा + ओदकम् (*iii*) गंगा + उदकम्

7. परमेशः तु सर्वम् पश्यति।

(*i*) प + रमेशः (*ii*) परम + इशः (*iii*) परम + ईशः

8. यद्यपि त्वं सत्यं न वदसि तथापि शृणोमि।

(*i*) यदी + अपि (*ii*) यद्य + अपि (*iii*) यदि + अपि

9. देव्युवाच–''वरं वृणीष्व।''

(*i*) देवि + युवाच (*ii*) देवी + उवाच (*iii*) देव् + युवाच्

10. तम् गायकः अत्र एव गायति।

(*i*) गा + यकः (*ii*) गाय + कः (*iii*) गै + अकः

© New Saraswati House (India) Private Limited

V. अधोलिखितवाक्येषु रञ्जितपदेषु संशोधनं कृत्वा पुनः लिखत।

(अधोलिखित वाक्यों में रंगीन पदों का संशोधन करके पुनः लिखिए।)

1. तत्र मम गृह + ओद्यानम् वर्तते। ..... + ...
2. **जला + अभावात्** कथम् भवान् जीविष्यति। ..... + ...
3. सः मूषकस्यूपरि जलं परिसिञ्चति। .....
4. तस्य अंगुली वृश्चनेन छिन्ना + भवत्। ..... + ...
5. नृपस्य पीडा शान्त + अभवत्। ..... + ...
6. क्षुद्रो + यम् कीटः अस्ति। ..... + ...
7. मन्येहम् त्वं वीरः असि। .....
8. धर्मः हियेकः तेषु विशेषः। .....
9. सत्यमेव मृग + एन्द्रता। ..... + ...
10. नित्यम् वृद्धो + उपसेविनः चत्वारि वर्धन्ते। ..... + ...

VI. मञ्जूषातः उचितं सन्धियुक्तं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(मंजूषा से उचित संधियुक्त पद चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

अतीव, स्वच्छम्, वर्षर्तुः, देव्यस्ति, नाविकस्य,
पावकः, ममोपहासम्, प्रतीक्षाम्, पवनः, मात्रर्थम्

1. त्वम् किंमर्थम् ..... करोषि?
2. कस्य ..... करोषि?
3. इदं रामायणम् तु ..... नयामि।
4. प्रातःकाले सुगन्धितः ..... वहति।
5. इयम् ..... तरणिः।
6. गृहे ..... न वा?
7. मह्यम् ..... न रोचते।
8. मह्यम् वसन्तर्तुः ..... रोचते।
9. ..... दर्पणम् आनय।
10. ..... ज्वलति।

© New Saraswati House (India) Private Limited

4 शब्दरूप-प्रकरणम्

संस्कृत भाषा में निम्नलिखित तीन लिंग होते हैं :

1. पुंल्लिङ्ग 2. स्त्रीलिङ्ग 3. नपुंसकलिङ्ग

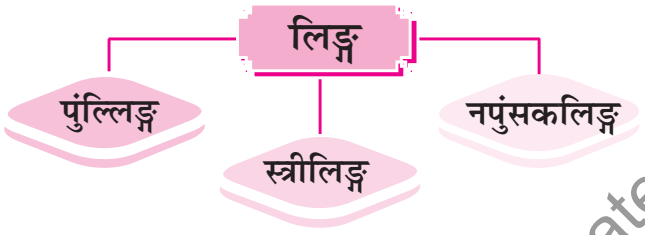

प्रत्येक लिंग के अलग-अलग शब्द रूप चलते हैं। शब्द जिस अक्षर से समाप्त होता है, उस अक्षर के पीछे 'कार' लिख देते हैं, इस प्रकार 'अ' को हम 'अकार', 'इ' को 'इकार', 'ई' को 'ईकार' तथा 'त्' को तकार भी कह सकते हैं।

संस्कृत में 'अ' से अंत होने वाले शब्द अकारान्त, 'आ' से अंत होने वाले शब्द आकारान्त तथा 'इ' से अंत होने वाले शब्द इकारान्त कहलाते हैं।

एक ध्वनि (अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त, तकारान्त इत्यादि) एवं एक लिंग के सभी शब्दों के रूप (कभी-कभी थोड़े-से अंतर के साथ) प्राय: एक जैसे ही चलते हैं।

अकारान्त पुंल्लिंग शब्द

अज (बकरा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अज:	अजौ	अजा:
द्वितीया	अजम्	अजौ	अजान्
तृतीया	अजेन	अजाभ्याम्	अजै:
चतुर्थी	अजाय	अजाभ्याम्	अजेभ्य:
पंचमी	अजात्	अजाभ्याम्	अजेभ्य:
षष्ठी	अजस्य	अजयो:	अजानाम्
सप्तमी	अजे	अजयो:	अजेषु
संबोधन	हे अज!	हे अजौ!	हे अजा:!

© New Saraswati House (India) Private Limited

देव (देवता)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	देवः	देवौ	देवाः
द्वितीया	देवम्	देवौ	देवान्
तृतीया	देवेन	देवाभ्याम्	देवैः
चतुर्थी	देवाय	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
पंचमी	देवात्	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
षष्ठी	देवस्य	देवयोः	देवानाम्
सप्तमी	देवे	देवयोः	देवेषु
संबोधन	हे देव!	हे देवौ!	हे देवाः!

राम

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पंचमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
संबोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामाः!

विशेष–रामेण तथा रामाणाम् में न के स्थान पर ण है, क्योंकि नियम है कि र्, ऋ तथा ष् के बाद यदि **न** आ जाए तो **न** का **ण** हो जाता है, किंतु **न्** के हलन्त होने पर **न्** का **ण** नहीं होता; यथा–रामान्। वानर, सिंह, नर, गज, मानव, बाल, बालक, छात्र, कर, अनल, आचार्य, सूद, चौर, काल आदि अकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप भी इसी तरह चलेंगे।

इकारान्त पुंल्लिंग शब्द

कवि (लेखक/कविता करने वाला)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कविः	कवी	कवयः
द्वितीया	कविम्	कवी	कवीन्
तृतीया	कविना	कविभ्याम्	कविभिः
चतुर्थी	कवये	कविभ्याम्	कविभ्यः
पंचमी	कवेः	कविभ्याम्	कविभ्यः
षष्ठी	कवेः	कव्योः	कवीनाम्
सप्तमी	कवौ	कव्योः	कविषु
संबोधन	हे कवे!	हे कवी!	हे कवयः!

© New Saraswati House (India) Private Limited

कवि के समान चलने वाले अन्य शब्द हैं–भूपति, महीपति, नृपति = राजा, मुनि, ऋषि = तपस्वी, रश्मि = किरण, हरि = विष्णु, वानर, रवि = सूर्य, अग्नि = आग, वह्नि = आग, कपि = वानर, मरीचि = किरण, असि = तलवार, गिरि = पर्वत, सारथि = रथचालक, निधि = खजाना, व्याधि = रोग, यति = योगी, अरि = शत्रु, उदधि = समुद्र, अधिपति = स्वामी, पाणि = हाथ।

पति (स्वामी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पंचमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
संबोधन	हे पते!	हे पती!	हे पतयः!

पति के ही समान 'सखि' शब्द के रूप भी चलेंगे।

ईकारान्त पुंल्लिंग शब्द

सुधी (श्रेष्ठ बुद्धि वाला)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
द्वितीया	सुधियम्	सुधियौ	सुधियः
तृतीया	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
चतुर्थी	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
पंचमी	सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
षष्ठी	सुधियः	सुधियोः	सुधीनाम्
सप्तमी	सुधियि	सुधियोः	सुधीषु
सम्बोधन	हे सुधीः!	हे सुधियौ!	हे सुधियः!

© New Saraswati House (India) Private Limited

उकारान्त पुंल्लिंग शब्द

गुरु (आचार्य/महान भारी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गुरुः	गुरू	गुरवः
द्वितीया	गुरुम्	गुरू	गुरून्
तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
चतुर्थी	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
पंचमी	गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
षष्ठी	गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
सप्तमी	गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
संबोधन	हे गुरो!	हे गुरू!	हे गुरवः!

गुरु के ही समान शेष उकारान्त पुंल्लिंग शब्द के रूप चलेंगे; यथा–वायु = हवा, साधु = सज्जन, बन्धु = संबंधी, बिन्दु = बूँद, प्रभु = ईश्वर, रिपु = शत्रु, भानु = सूर्य, सूनु = पुत्र, बाहु = भुजा, शिशु = छोटा बालक, पलाण्डु = प्याज, विधु = चाँद, तरु = वृक्ष, ऋतु = मौसम, विष्णु = ईश्वर/पालक, राहु = ग्रह, मनु = ब्रह्मा के पुत्र/आदि पुरुष, कुरु = एक राजा, लघु = हल्का या छोटा, पृथु = स्थूल, मोटा, पटु = चतुर, शम्भु = शिव पशु = जानवर, रेणु = धूल, इन्दु = चाँद, मृदु = कोमल, इषु = बाण, परशु = कुल्हाड़ी, मृत्यु = मौत।

विशेष–किसी पद में र्, ष् तथा ऋ के बाद न् आए तो न् को ण् हो जाता है। इसलिए यहाँ गुरुणा तथा गुरुणाम् में 'ण्' है। पदान्त 'न्' का ण् नहीं होता है; जैसे– गुरून्।

ऋकारान्त पुंल्लिंग शब्द

पितृ (पिता)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पंचमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः!	हे पितरौ!	हे पितरः!

© New Saraswati House (India) Private Limited

भ्रातृ (भाई)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भ्राता	भ्रातरौ	भ्रातरः
द्वितीया	भ्रातरम्	भ्रातरौ	भ्रातॄन्
तृतीया	भ्रात्रा	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभिः
चतुर्थी	भ्रात्रे	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभ्यः
पंचमी	भ्रातुः	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभ्यः
षष्ठी	भ्रातुः	भ्रात्रोः	भ्रातॄणाम्
सप्तमी	भ्रातरि	भ्रात्रोः	भ्रातृषु
सम्बोधन	हे भ्रातः!	हे भ्रातरौ!	हे भ्रातरः!

इसी प्रकार इन शब्दों के रूप भी चलेंगे– सवितृ = सूर्य, वक्तृ = वक्ता, क्रेतृ = खरीददार, कर्तृ = करने वाला, होतृ = हवन, श्रोतृ = श्रोता, गोप्तृ = संरक्षक, धातृ = ब्रह्मा, नेतृ = नेता, देवृ = देवर, भर्तृ=स्वामी, हन्तृ=मारने वाला, गन्तृ=जानेवाला।

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

लता (टहनी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पंचमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
संबोधन	हे लते!	हे लते!	हे लताः!

रमा (लक्ष्मी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीया	रमाम्	रमे	रमाः
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
चतुर्थी	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पंचमी	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
षष्ठी	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	रमयोः	रमासु
संबोधन	हे रमे!	हे रमे!	हे रमाः!

© New Saraswati House (India) Private Limited

निशा (रात)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	निशा	निशे	निशाः
द्वितीया	निशाम्	निशे	निशाः
तृतीया	निशया	निशाभ्याम्	निशाभिः
चतुर्थी	निशायै	निशाभ्याम्	निशाभ्यः
पंचमी	निशायाः	निशाभ्याम्	निशाभ्यः
षष्ठी	निशायाः	निशयोः	निशानाम्
सप्तमी	निशायाम्	निशयोः	निशासु
संबोधन	हे निशे !	हे निशे !	हे निशाः !

माला, छात्रा, पाठशाला, कला, मुष्टिका (= मुट्ठी), निद्रा, लोमशा (= लोमड़ी), पिपीलिका (=चींटी), दोला (= झूला), व्यथा, छुरिका, दिनदर्शिका (= कैलेण्डर), अग्निपेटिका (= माचिस), सुता, वर्षा, जरा, ग्रीवा, सभा, कमला आदि आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप भी इसी तरह चलेंगे।

इकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

मति (बुद्धि)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै/मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पंचमी	मत्याः/मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः/मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्/मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	हे मते !	हे मती !	हे मतयः !

मति के समान चलने वाले कुछ अन्य शब्द हैं–रात्रि = रात, श्रुति = वैदिक ज्ञान, शान्ति = शान्ति, कृति = रचना, बुद्धि = बुद्धि, रुचि= रुचि या इच्छा, प्रकृति = स्वभाव, कटि = कमर, आकृति = आकार, मुक्ति=मोक्ष, वृत्ति=जीविका, भूमि=पृथ्वी, तृप्ति=संतोष, नीति=नीति, जाति=जाति इत्यादि।

© New Saraswati House (India) Private Limited

ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

नदी (सरिता)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पंचमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

इसी तरह इन शब्दों के भी रूप चलेंगे–जननी = माता, लक्ष्मी = विष्णुपत्नी, रजनी = रात, महिषी = भैंस (मादा), विदुषी = विदुषी, भगिनी = बहन, पत्नी = औरत, राज्ञी = रानी, पृथ्वी = भूमि, पौत्री = पोती, पुत्री = लड़की, स्त्री=नारी, देवी=देवी, पार्वती=शिव पत्नी, गौरी=पार्वती, सखी=सहेली, सहचरी=सखी, दासी=नौकरानी, सुहासिनी=हँसने वाली, काशी=बनारस, पुरी=नगर इत्यादि।

उकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

धेनु = गाय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै/धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पंचमी	धेन्वाः/धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः/धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्/धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो!	हे धेनू!	हे धेनवः!

इसी प्रकार अन्य उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप भी चलेंगे–तनु = शरीर, चञ्चु = चोंच, रज्जु = रस्सी, रेणु = धूल या पाउडर, शतद्रु = सतलुज नदी आदि।

© New Saraswati House (India) Private Limited

ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

वधू = बहू

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पंचमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	हे वधु!	हे वध्वौ!	हे वध्वः!

इसी प्रकार अन्य ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप चलेंगे–चमू = सेना, कर्कन्धू = बेर, श्वश्रू = सास इत्यादि।

ऋकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

मातृ (माँ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातृः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पंचमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातृणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	हे मातः!	हे मातरौ!	हे मातरः!

मातृ के समान चलने वाले कुछ अन्य शब्द हैं–दुहितृ=पुत्री, नप्तृ=नाती आदि।

© New Saraswati House (India) Private Limited

अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द

फल (फल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पंचमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
संबोधन	हे फल!	हे फले!	हे फलानि!

पुस्तक (किताब)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पुस्तकम्	पुस्तके	पुस्तकानि
द्वितीया	पुस्तकम्	पुस्तके	पुस्तकानि
तृतीया	पुस्तकेन	पुस्तकाभ्याम्	पुस्तकैः
चतुर्थी	पुस्तकाय	पुस्तकाभ्याम्	पुस्तकेभ्यः
पंचमी	पुस्तकात्	पुस्तकाभ्याम्	पुस्तकेभ्यः
षष्ठी	पुस्तकस्य	पुस्तकयोः	पुस्तकानाम्
सप्तमी	पुस्तके	पुस्तकयोः	पुस्तकेषु
संबोधन	हे पुस्तक!	हे पुस्तके!	हे पुस्तकानि!

मित्र (दोस्त)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मित्रम्	मित्रे	मित्राणि
द्वितीया	मित्रम्	मित्रे	मित्राणि
तृतीया	मित्रेण	मित्राभ्याम्	मित्रैः
चतुर्थी	मित्राय	मित्राभ्याम्	मित्रेभ्यः
पंचमी	मित्रात्	मित्राभ्याम्	मित्रेभ्यः
षष्ठी	मित्रस्य	मित्रयोः	मित्राणाम्
सप्तमी	मित्रे	मित्रयोः	मित्रेषु
संबोधन	हे मित्र!	हे मित्रे!	हे मित्राणि!

सभी अकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों छत्र, पत्र, चित्र, वस्त्र, धन, दुःख, चक्र, मुख, गृह, पुष्प, कार्य, पण्य (पैसा), वाक्य, भोजन, पात्र, वचन, आभूषण, नगर इत्यादि के रूप भी इसी तरह चलेंगे।

© New Saraswati House (India) Private Limited

इकारान्त नपुंसकलिंग शब्द

वारि (जल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पंचमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारि !/हे वारे !	हे वारिणी !	हे वारीणि !

अक्षि (आँख)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
द्वितीया	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
तृतीया	अक्ष्णा	अक्षिभ्याम्	अक्षीभिः
चतुर्थी	अक्ष्णे	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्यः
पंचमी	अक्ष्णः	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्यः
षष्ठी	अक्ष्णः	अक्ष्णोः	अक्ष्णाम्
सप्तमी	अक्ष्णि/अक्षिणि	अक्ष्णोः	अक्षिषु
सम्बोधन	हे अक्षे !/हे अक्षि !	हे अक्षिणी !	हे अक्षीणि !

अक्षि की ही तरह सुरभि, दधि तथा अस्थि आदि के रूप चलेंगे।

उकारान्त नपुंसकलिंग शब्द

मधु (शहद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पंचमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधो !/हे मधु !	हे मधुनी !	हे मधूनि !

© New Saraswati House (India) Private Limited

मधु के ही समान अन्य उकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप चलेंगे; यथा–दारु = लकड़ी, श्मश्रु = दाढ़ी, अश्रु = आँसू, वस्तु = चीज़, जानु = घुटना, वसु = धन इत्यादि।

ऋकारान्त नपुंसकलिंग शब्द

कर्तृ (करने वाला)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तृणि
द्वितीया	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तृणि
तृतीया	कर्त्रा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः
चतुर्थी	कर्त्रे	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
पंचमी	कर्तुः	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
षष्ठी	कर्तुः	कर्त्रोः	कर्तृणाम्
सप्तमी	कर्तरि	कर्त्रोः	कर्तृषु
सम्बोधन	हे कर्तृ !	हे कर्तृणी !	हे कर्तृणि !

इसी तरह अन्य ऋकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप चलेंगे; यथा–ज्ञातृ = जानने वाला, दातृ=देनेवाला, धातृ = धारण करने वाला, पालने वाला इत्यादि।

सर्वनाम शब्द

तत् = वह (पुंल्लिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

© New Saraswati House (India) Private Limited

तत् = वह (स्त्रीलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पंचमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

तत् = वह (नपुंसकलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

(शेष रूप पुंल्लिंग के समान होते हैं।)

एतत् = यह (पुंल्लिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषः	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्	एतौ	एतान्
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पंचमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

एतत् = यह (स्त्रीलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्	एते	एताः
तृतीया	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पंचमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः	एतासु

© New Saraswati House (India) Private Limited

एतत् = यह (नपुंसकलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एतत्	एते	एतानि
द्वितीया	एतत्	एते	एतानि

(शेष रूप पुंल्लिंग के समान होंगे।)

किम् = कौन (पुंल्लिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

किम् = क्या (स्त्रीलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पंचमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

सर्वनाम शब्दों के संबोधन नहीं हो सकते। संबोधन केवल संज्ञा तथा विशेषण आदि शब्दों के साथ आएँगे।

किम् = क्या (नपुंसकलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

(तृतीया विभक्ति के बाद शेष पुंल्लिंग के समान हैं।)

© New Saraswati House (India) Private Limited

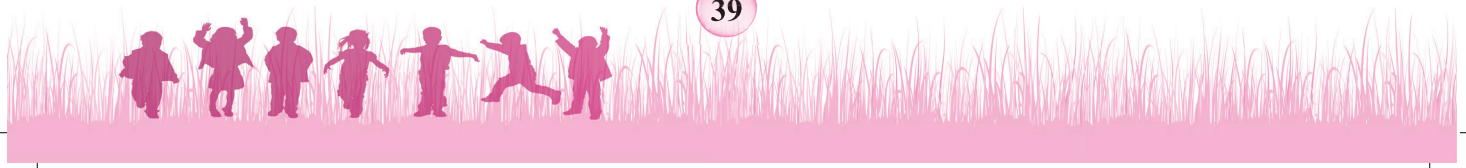

अस्मद् = मैं, हम (दोनों लिंगों में समान)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम् (मा)	आवाम् (नौ)	अस्मान् (नः)
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम् (मे)	आवाभ्याम् (नौ)	अस्मभ्यम् (नः)
पंचमी	मत्	आवाभ्याम् (नौ)	अस्मत्
षष्ठी	मम (मे)	आवयोः (नौ)	अस्माकम् (नः)
सप्तमी	मयि	आवयोः (नौ)	अस्मासु

युष्मद् = तू, तुम (दोनों लिंगों में समान)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम् (त्वा)	युवाम्	युष्मान् (वः)
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः (नः)
चतुर्थी	तुभ्यम् (ते)	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम् (वः)
पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव (ते)	युवयोः	युष्माकम् (वः)
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

यत् = जो (पुंल्लिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पंचमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

© New Saraswati House (India) Private Limited

यत् = जो (स्त्रीलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पंचमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

यत् = जो (नपुंसकलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि

(शेष रूप पुंल्लिंग के समान होंगे)

ध्यातव्यम्

- शब्द रूपों में संधि के कारण कुछ परिवर्तन हो जाते हैं।
- सर्वनाम शब्दों के संबोधन रूप नहीं होते।
- एकवचन के शब्द रूप के साथ एकवचन, द्विवचन के शब्द रूप के साथ द्विवचन तथा बहुवचन के शब्द रूप के साथ बहुवचन की क्रिया का प्रयोग होता है।
- रूपों को पहले विभक्ति के अनुसार, फिर वचनों के अनुसार भी याद कर लें।
- रूपों की वर्तनी का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- तृतीया, चतुर्थी तथा पंचमी विभक्ति के द्विवचन पद एक जैसे ही होते हैं। इसी तरह षष्ठी व सप्तमी विभक्ति के द्विवचन तथा अधिकतर प्रथमा व द्वितीया विभक्ति के द्विवचन रूप भी एक ही होते हैं।
- शुद्ध वर्तनी लिखने के लिए उच्चारण भी शुद्ध करना चाहिए।

© New Saraswati House (India) Private Limited

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. संस्कृत भाषा में तीन लिंग होते हैं।
2. प्रत्येक लिंग के रूप अलग-अलग चलते हैं।
3. अंतिम अक्षर समान हो तो लिंगानुसार रूप प्रायः एक जैसे ही चलते हैं।
4. आ से अंत होने वाले शब्दों को आकारान्त कहते हैं तथा आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप प्रायः एक समान चलते हैं।
5. 'ऋ' 'र्' तथा 'ष्' के बाद स्वरयुक्त 'न्' आए तो वह ण् हो जाता है, परंतु पदान्त 'न्' का ण् नहीं होता।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. मञ्जूषातः समुचितपदेन चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(मंजूषा से उचित पद चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

1. हरि (विष्णु, वानर)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरिः	.....	हरयः
द्वितीया	हरिम्	हरी	.....
तृतीया	हरिणा	.....	हरिभिः
चतुर्थी	.....	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पंचमी	.....	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
षष्ठी	हरेः	.....	हरीणाम्
सप्तमी	.....	हर्योः	.....
सम्बोधन	हे हरे!	.....	हे हरयः!

हर्योः, हरीन्, हरौ, हरिषु, हे हरी, हरिभ्याम्, हरये, हरेः, हरी

2. सखा (मित्र)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	.....
द्वितीया	सखायम्	.....	.....
तृतीया	सख्या	.....	सखिभिः

© New Saraswati House (India) Private Limited

चतुर्थी	.....	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पंचमी	.....	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	.....
सप्तमी	.....	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	हे सखे!	हे सखायौ!	.....

सखायौ, सखीनाम्, सखीन्, सखायः, सख्युः, हे सखायः!, सख्ये, सख्यौ, सखिभ्याम्

3. महाराज (महाराजा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	महाराजः	महाराजौ	.....
द्वितीया	महाराजम्	.....	महाराजान्
तृतीया	.....	महाराजाभ्याम्	महाराजैः
चतुर्थी	.....	.....	महाराजेभ्यः
पंचमी	.....	महाराजाभ्याम्	.....
षष्ठी	महाराजस्य	.....	महाराजानाम्
सप्तमी	महाराजे	महाराजयोः	.....
सम्बोधन	हे महाराज!	हे महाराजौ!	.....

महाराजात्, महाराजेभ्यः, हे महाराजाः!, महाराजेषु, महाराजाभ्याम्, महाराजाय, महाराजेन, महाराजयोः, महाराजौ, महाराजाः

4. साधु (सज्जन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	साधुः	.....	साधवः
द्वितीया	साधुम्	साधू	.....
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	.....
चतुर्थी	.....	.....	साधुभ्यः
पंचमी	.....	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
षष्ठी	साधोः	साध्वोः	.....
सप्तमी	.....	साध्वोः	साधुषु
सम्बोधन	हे साधो!	.....	हे साधवः!

साधौ, हे साधू!, साधू, साधून्, साधुभिः, साधुभ्याम्, साधूनाम्, साधवे, साधोः

© New Saraswati House (India) Private Limited

5. कर्तृ (कर्ता)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कर्ता	.....	कर्तारः
द्वितीया	.....	कर्तारौ	कर्तॄन्
तृतीया	कर्त्रा	.....	कर्तृभिः
चतुर्थी	.....	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
पंचमी	कर्तुः	कर्तृभ्याम्	.....
षष्ठी	कर्तुः	.....	कर्तॄणाम्
सप्तमी	.....	कर्त्रोः	.....
सम्बोधन	.....	हे कर्तारौ !	.....

कर्तृभ्यः, कर्त्रोः, कर्तारौ, कर्तृभ्याम्, कर्तारम्, कर्त्रे, हे कर्तारः!, कर्तृषु, कर्तरि, हे कर्तः

6. दातृ (दाता)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	.....	दातारौ	दातारः
द्वितीया	दातारम्	.....	दातॄन्
तृतीया	दात्रा	दातृभ्याम्	.....
चतुर्थी	.....	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
पंचमी	दातुः	दातृभ्याम्	.....
षष्ठी	.....	.....	दातॄणाम्
सप्तमी	.....	दात्रोः	दातृषु
सम्बोधन	हे दातः!	.....	हे दातारः!

दातृभ्यः, दातारौ, दाता, दात्रोः, दातुः, दातृभिः, हे दातारौ !, दात्रे, दातरि

7. रात्रि (रात)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	.....	रात्री	.....
द्वितीया	.....	रात्री	रात्रीः
तृतीया	.....	रात्रिभ्याम्	रात्रिभिः
चतुर्थी	...../रात्र्यै:	.....	रात्रिभ्यः
पंचमी	...../रात्र्याः	रात्रिभ्याम्	रात्रिभ्यः
षष्ठी	...../रात्र्याः	रात्र्योः	रात्रीणाम्
सप्तमी	...../रात्र्याम्	रात्र्योः	रात्रिषु
सम्बोधन	हे रात्रे!	हे रात्री !	हे रात्रयः!

रात्रेः, रात्रिः, रात्रेः, रात्रयः, रात्रिम्, रात्रौ, रात्र्या, रात्रिभ्याम्, रात्रये

©New Saraswati House (India) Private Limited

8. स्त्री (औरत/पत्नी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	.....	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	.....	स्त्रियौ	स्त्रियः/स्त्रीः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	.....
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	.....
पंचमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	.....
षष्ठी	स्त्रियाः	.....	.....
सप्तमी	.....	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बोधन	.....	हे स्त्रियौ!	हे स्त्रियः!

स्त्रीभ्यः, स्त्री, स्त्रियोः, स्त्रीणाम्, स्त्रियम्, स्त्रीभिः, स्त्रियाम्, हे स्त्रि!, स्त्रीभ्यः

9. दधि (दही)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दधि	दधिनी	.....
द्वितीया	दधि	.....	.....
तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
चतुर्थी	दध्ने	.....	.....
पंचमी	दध्नः	दधिभ्याम्	.....
षष्ठी	दध्नः	दध्नोः	.....
सप्तमी	दध्नि/दधिनि	.....	दधिषु
सम्बोधन	हे दधे!/हे दधि!	हे दधिनी!	.....

दधिभ्यः, दधीनि, दध्नाम्, दधिनी, दधीनि, दधिभ्याम्:, दध्नोः, हे दधीनि!, दधिभ्यः

©New Saraswati House (India) Private Limited

10. अश्रु (आँसू)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अश्रु	अश्रुणी	.....
द्वितीया	अश्रु	.....	अश्रूणि
तृतीया	.....	अश्रुभ्याम्	अश्रुभिः
चतुर्थी	.....	अश्रुभ्याम्	अश्रुभ्यः
पंचमी	.....	अश्रुभ्याम्	अश्रुभ्यः
षष्ठी	.....	अश्रुणोः	अश्रूणाम्
सप्तमी	.....	अश्रुणोः	.....
सम्बोधन	हे अश्रो!/हे अश्रु!	हे अश्रुणी!	.....

अश्रुणः, अश्रुणी, अश्रुणः, अश्रूणि, अश्रुणि, अश्रुषु, हे अश्रूणि! अश्रुणा, अश्रुणे

© New Saraswati House (India) Private Limited